[This question paper contains 2 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 1343 **D** **Your Roll No.....**

Unique Paper Code : 205202

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Name of the Paper : हिन्दी प्रश्नपत्र V : उत्तर मध्यकालीन कविता
(प्रवेशवर्ष 2011 और तत्पश्चात्)

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'बिहारी की कविता भक्ति, नीति और शृंगार की त्रिवेणी है' इस कथन की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

रहीम की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए।

2. 'भूषण वीररस के कवि हैं' इस कथन की विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

देव की शृंगार-भावना पर विचार कीजिए।

3. 'घनानंद के काव्य में विरह की तीव्र अनुभूति है', इस कथन की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

द्विजदेव के काव्य में प्रकृति-चित्रण पर प्रकाश डालिए।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: (8+8)

(क) साईं अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोइ
तब लग मन में राखिए, जब लगि कारज होइ
जब लगि कारज होइ, भूलि कबहूँ नहिं कहिए
दुरजन हँसे न कोई, आप सियरे ह्वै रहिए
कह गिरिधर कविराय, बात चतुरन की ताईं
करतूती कहि देत, आप कहिए नहिं साईं

(ख) लिखन बैठि जाकी छबि गहि गहि गरब गरुर ।
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर ।।
दृग उरझत, टूटत कुटुम जुरत चतुर-चित प्रीति !
परति गाँठि दुरजन हियैं, दई नई यह रीति !!

(ग) डोलि रहे बिकसे तरु एकै, सु एकै रहे हैं नवाइ कैं सीसहिं ।
त्यौं 'द्विजदेव मरंद के ब्याज सौं, एकै अनंद के आँसू बरीसहिं ।
कौन कहै उपमा तिनकी जे लहैंई, सबै बिधि संपति दीसहिं ।
तैसैंहि ह्वै अनुराग -भरे कर-पल्लव जोरि कै एकै असीसहिं ।।

5. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) उद्घाटित कीजिए : (7+7)

(क) **निर्देश : प्रेम-भाव विश्लेषण**

पहलें अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू ।
निरधार अधार दै धार- मंझार दई गहि बाँह न बोरियै जू !!
घनआनंद आपने चातक को गुन-बाधिलैं मोह न छोरियै जू !
रस प्याय कै ज्याय बढाय कै आस बिसास मैं यौं बिष घोरियै जू ।।

(ख) **निर्देश : भाव सौंदर्य**

ज्यौं नाचत कठपूतरी, करम नचावत गात ।
अपने हाथ रहीम ज्यौं, नहीं आपुने हाथ ।।
रहिमन अती न कीजिए, गहि रहिए निज कानि ।
सैजन अति फूले तऊ डार पात की हानि ।।

(ग) **निर्देश : बिम्ब-विधान**

उज्जवल कपोल अरुनाधर मधुर बोल,
लोल चकचौंध सो अमंद मंद हास को,
चीकने चिबुक चारु नासिका मुकुत भारु,
ललित लिलार बेंदी बंदन बिलास को ।।
कंचन किनारी झुमकारी मै करन-फूल,
सीस-फूल हीरा लाल मोतिन उजास को,
'देव' ज्यौं उदित इंदु-मंडल अखंड मुख,
मंडल के आस-पास मंडल प्रकास को ।।